

मॉनसून के पूर्व जलाशयों में अत्यधिक जल संग्रहण वर्ष 2006 के बाढ़ के पुनरावृत्ति की चेतावनी?

अब जबकि देश भर में मॉनसून की प्रतीक्षा हो रही है, देश में कई बड़े जलाशयों में काफी मात्रा में पानी मौजूद है, जो कि उनके संग्रहण क्षमता का 87 प्रतिशत तक है। केन्द्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) द्वारा 16 जून 2007 को जारी किये गये आंकड़ों के अनुसार, सीडब्ल्यूसी जिन 76 बड़े जलाशयों की निगरानी करता है उनमें से 41 में संग्रहण स्तर का 20 प्रतिशत से ज्यादा पानी मौजूद है, जबकि आदर्श तौर पर, भराव का स्तर 10 प्रतिशत या कम होना चाहिए। 20 जलाशयों के मामले में, पानी का स्तर जलाशय के भराव क्षमता के एक तिहाई से ज्यादा था। यह स्थिति खतरनाक हो सकती है क्योंकि इससे मॉनसून के दौरान बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

मॉनसून के ठीक पहले जलाशयों में इतनी अधिक मात्रा में पानी की मौजूदगी के ज्यादातर मामलों को तर्कसंगत ठहराना मुश्किल है। खासकर ये संग्रहण विदर्भ (महाराष्ट्र), गुजरात एवं राजस्थान जैसे सूखा प्रभावित क्षेत्रों में देखे जाते हैं या महानदी जैसी बाढ़ग्रस्त नदीघाटी में देखे जाते हैं।

विदर्भ उदाहरण के तौर पर अपर पैनगंगा (16 जून को जलाशय की पूर्ण भराव क्षमता 964 एमसीएम का 44 प्रतिशत), कामटी खैरी (88 प्रतिशत), अपर वर्धा (33 प्रतिशत) एवं अरुणावती (28 प्रतिशत) सभी विदर्भ के सूखा प्रभावित क्षेत्र में हैं, जहां किसानों द्वारा आत्महत्या किये जाने का एक प्रमुख कारण है सिंचाई की अपर्याप्त सुविधा का होना। प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तावित बहु-प्रचारित विदर्भ पैकेज मुख्य रूप से उस क्षेत्र के लिए बड़ी सिंचाई परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त संसाधन से युक्त है।

गुजरात राज्य में उत्तरी क्षेत्र के सूखा प्रभावित क्षेत्र में भी यही स्थिति है, जहां माही नदी पर कडाना बांध (54 प्रतिशत) व पानम बांध (38 प्रतिशत) एवं साबरमती नदी पर धरोई बांध (38 प्रतिशत) व जाखम बांध (23 प्रतिशत, राजस्थान में) में काफी ज्यादा जल संग्रहण है।

राजस्थान पड़ोसी राज्य राजस्थान के चम्बल नदी घाटी में, सीडब्ल्यूसी के 16 जून के रिपोर्ट के अनुसार गांधी सागर में 35 प्रतिशत एवं राणाप्रताप सागर में 87 प्रतिशत संग्रहण क्षमता भरी हुई है। चंबल नदी में वर्ष 2006 में बाढ़ आयी थी एवं मॉनसून पूर्व इतनी ज्यादा संग्रहण से इस साल भी उसी तरह के बाढ़ का जोखिम बना हुआ है।

महानदी बाढ़ग्रस्त महानदी घाटी में, छत्तीसगढ़ में गंगरेल बांध (41 प्रतिशत) एवं हसदेव बांगो (27 प्रतिशत) एवं उड़ीसा में हीराकुड बांध (42 प्रतिशत) जलाशयों में अतार्किक रूप से ज्यादा पानी संग्रहित है। इससे 2007 के मॉनसून में बाढ़ से अतिनुकसान की संभावना बनती है।

बड़े बांध एवं 2006 का बाढ़ यह काफी महत्वपूर्ण है कि तापी, माही, साबरमती, चम्बल, कृष्णा एवं गोदावरी जैसे नदीघाटी में संग्रहण स्तर काफी ज्यादा है। इन नदीघाटियों में वर्ष 2006 में आये बाढ़ से भयानक नुकसान हुआ था, और वह भी ज्यादातर मॉनसून का मौसम आधा बीतने से पहले ही। इन नदीघाटियों में बाढ़ से हुये नुकसान की ज्यादातर घटनाओं की प्रमुख वजहों में से एक जलाशयों से एकाएक काफी ज्यादा मात्रा में पानी छोड़ा जाना था एवं जलाशयों के संग्रहण के बेहतर प्रबंधन से इनमें से कई बाढ़ों का टाला जा सकता था। इन नदीघाटियों के कई जलाशयों में 2006 के मॉनसून के पूर्व काफी ज्यादा मात्रा में जल संग्रहण था, अब 2007 में भी यही स्थिति बनी हुई है। वर्ष 2006 में गलत जलाशय संचालन के कारण आये विनाशकारी बाढ़ के लिए दोषी लोगों के खिलाफ अब तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है।

इन नदीघाटियों में जलाशयों के वर्तमान संग्रहण स्थिति को देखने से लगता है कि यदि पर्याप्त पूर्व सावधानी नहीं बरती गई तो 2006 की घटनाओं की पुनरावृत्ति हो सकती है। अंतरराष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमानों का पहले ही आकलन है कि पश्चिमी भारत (जहां ज्यादातर जलाशयों में ज्यादा पानी संग्रहित है) में कुछ जगह मूसलाधार बारिश सहित सामान्य से ज्यादा वर्षा की संभावना है। यदि ये पूर्वानुमान सही साबित होते हैं तब, जैसा कि पहले बताया गया है, इन नदीघाटियों में जलाशयों में ज्यादा पानी के स्तर विनाशकारी बाढ़ की संभावना को बढ़ा सकते हैं।

स्पष्ट है कि भारत में पारदर्शी, जवाबदेहपूर्ण जलाशय नीति एवं जलाशय संचालन नियम की आवश्यकता है जो कानूनी रूप से बाध्यकारी हो। ऐसी नीतियों का अभाव लोगों एवं अर्थव्यवस्था के लिए काफी नुकसानदेह साबित हो सकते हैं।

हिमांशु ठक्कर (ht.sandrp@gmail.com)

बांधों, नदियों एवं लोगों का दक्षिण एशिया नेटवर्क, दिल्ली (www.sandrp.in)

(फोन : 2748 4655, 9968242798)